श्री आदिनाथजिन पूजा

३/१ पीले चावल/लौंग क्षेपण करना

नाभिराय मरुदेवि के नन्दन, आदिनाथ स्वामी महाराज।
सर्वार्थसिद्धितैं आप पधारे, मध्यलोक मांही जिनराज॥
इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिल करके, अपने कर पूजे प्रभु पांय॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

झारी से जल

क्षीरोदधिके उज्जवल जल ले, श्री जिनवर पद पूजन जाय।
जन्म जरा दुःख मेटन कारन, ल्याय चढाऊँ प्रभुजी के पांय॥
श्री आदिनाथके चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वचकाय।
हे करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजौं प्रभु पांय॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

चन्दन जल

मलयागिरि चंदन दाह निकंदन, कञ्चन झारी में भर ल्याय।
श्री जी के चरण चढ़ावो भविजन, भवआताप तुरन्त मिटिजाय॥ श्री आदि..

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

सफेद चावल

शुभशालि अखंडित सौरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय।
श्री जी के चरण चढ़ावो भविजन, अक्षयपद को तुरत उपाय॥ श्री आदि..

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

पीले चावल

कमल केतकी बेल चमेली, श्री गुलाब के पुष्प मंगाय।
श्री जी के चरण चढ़ावो भविजन, कामबाण तुरत नसिजाय॥ श्री आदि..

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

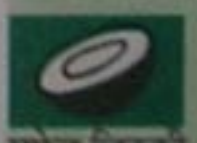

सफेद चिटकी

नेवज लीना षट रस भीना, श्री जिनवर आगे धरवाय।
थाल भराऊँ क्षुधा नसाऊँ, ल्याऊँ प्रभु के मंगल गाय॥ श्री आदि..

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

जगमग जगमग होत दशोंदिश, ज्योति रही मन्दिर में छाय।

श्री जी के सन्मुख करत आरती, मोहितिमिर नासै दुखदाय॥

श्री आदिनाथके चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वचकाय।

हे करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजौं प्रभु पांय॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

धूप

अगर कपूर सुगन्ध मनोहर, तगर कपूर सुद्रव्य मिलाय।

श्री जी के सन्मुख खेय धूपायन, कर्मजरे चहुँगति मिटिजाय॥ श्री आदि..

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

फल

श्रीफल और बादाम सुपारी, केला आदि छूहारा ल्याय।

महामोक्षफल पावन कारण, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभु जी के पांय॥ श्री आदि..

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

अर्घ

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय।

दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥ श्री आदि..

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

पंचकल्याणक

सर्वार्थसिद्धितैं चये, मरुदेवी उर आय।

दोज असित आषाढ़ की, जजूं तिहारे पांय॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

चैत बदी नौमी दिना, जनम्या श्रीभगवान।

सुरपति उत्सव अति कर्या, मैं पूजौं धरि ध्यान॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

तृणवत् ऋद्धि सब छोंडिके, तप धार्यो वन जाय।

नौमी चैत्र असेत की, जजूं तिहारे पांय॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां तपकल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन बदि एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान।

इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजौं इह थान॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण एकादश्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्ताये श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

माघ चतुर्दशि कृष्ण की, मोक्ष गये भगवान।
भवि जीवोंको बोधिके, पहुँचे शिवपुर थान।

ॐ ह्रीं माघ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आदीश्वर महाराज मैं विनती तुम से करूँ।
चारों गति के मांहि मैं दुःख पायो सो सुनो॥
अष्ट कर्म मैं एकलो, यह दुष्ट महादुःख देत हो।
कबहुंक इतर निगोद में मोकूं पटकत करत अचेत हो॥
म्हारी दीनतनी सुन वीनती॥

प्रभु कबहुँक पटक्यो नरक में, जठे जीव महादुःख पाय हो।
निष्ठुर निरदई नारकी, जठे करत परस्पर घात हो॥ म्हारी...

प्रभु नरकतणा दुःख अब कहूँ, जठे करत परस्पर घात हो।
कोइयक बांध्यो खंभस्यों, पापी दे मुद्गर की मार हो॥
कोइयक काटैं करोंतसों, पापी अगंतणी दोय फाड़ हो। म्हारी...

प्रभु इह विधि दुःख भुगत्या घणां, फिर गति पाई तिरियंच हो।।
हिरण बकरा बाछड़ा पशु, दीन गरीब अनाथ हो।
पकड़ कसाई जाल में, पापी काट काट तन खाय हो॥ म्हारी...

प्रभु मैं ऊँट बलद भैंसां भयो, जापै लादियो भार अपार हो।
नहीं चाल्यो जब गिर पर्‌यो, पापी दे सोटन की मार हो॥ म्हारी...

प्रभु ! कोइयक पुण्य संयोग सूं, मैं तो पायो स्वर्ग निवास हो।
देवांगना संग रमि रह्यो, जठे भोगनि को परिताप हो॥ म्हारी...

प्रभु संग अप्सरा रम रह्यो, कर कर अति अनुराग हो॥

कबहुँक नंदन वन विषैं प्रभु कबहुंक वनगृह मांहि हो। म्हारी...

प्रभु यहि विधि काल गमायके, फिर माला गई मुरझाय हो॥
देव तिथि सब घट गई, फिर उपज्यो सोच अपार हो।
सोच करता तन खिर पड्यो, फिर उपज्यो गर्भ में जाय हो॥ म्हारी...

प्रभु गर्भतणा दुःख अब कहूँ, जठे सकुड़ाई की ठौर हो।
हलन चलन नहिं करसक्यो, जठे सघन कीच घनघोर हो॥ म्हारी...

माता खावे चरपरो, फेर लागे तन संताप हो।
प्रभु ज्यों जननी तातो भखै, फिर उपजै तन संताप हो॥ म्हारी...

औंधे मुख झूल्यो रह्यो फेर निकसन कौन उपाय हो।
कठिन कठिन कर निसरो, जैसे निसरै जंत्री में तार हो॥ म्हारी...

प्रभु फिर निकसत ही धरत्यां पड्यो, फिर लागी भूख अपार हो।
रोय रोय विलख्यो घणों, दुख वेदन को नहिं पार हो॥ म्हारी...

प्रभु दुःख मेटन समरथ धनी, यातैं लागूं तिहारे पांय हो।
सेवक अरज करैं प्रभु! मोकूं भवोदधि पार उतार हो॥ म्हारी...

दोहा

श्रीजीकी महिमा अगम है, कोई न पावै पार।
मैं मति अल्प अज्ञान हूँ, कौन करै विस्तार॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

विनती ऋषभ जिनेशकी, जो पढ़सी मनलाय।
स्वर्गों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जात॥

इत्याशीर्वादः।